UG study material for students of History

Subject : History
class : UG Semester IV
Paper : MJC-05
Topic : हर्षवर्द्धन का मूल्यांकन

By : Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor
Dept. of History
Jagjiwan College, Ara

हर्ष का मूल्यांकन (Evaluation of Harsha)

हर्षवर्द्धन सातवीं शताब्दी की भारतीय राजनीति का श्रेष्ठतम नायक था। एक कुशल योद्धा, साम्राज्य निर्माता, प्रशासक, लोककल्याणकारी और विद्यानुरागी शासक के रूप में सभी उसकी प्रशंसा करते हैं।

(1) हर्ष एक विजेता के रूप में— हर्ष एक ऐसा विजेता था, जिसे विजय-पराजय का सम्मिलित अनुभव था। हालांकि उसे पुलकेशिन द्वितीय से पराजित होना पड़ा था, लेकिन इतना

Scanned by CamScanner

अवश्य कहा जा सकता है कि यद्यपि वह समुद्रगुप्त की भाँति अजेय नहीं था, तथापि उसके प्रभाव के फलस्वरूप अन्य तत्कालीन शासकों को यह साहस नहीं हुआ कि वे हर्ष को चुनौती दें। उसके साम्राज्य की सीमाएँ जो आसाम से कश्मीर तक तथा हिमालय से विंध्याचल तक विस्तृत थीं, उसके महान् विजेता होने का संकेत देते हैं।

(2) हर्ष एक सुयोग्य शासक के रूप में - हर्ष एक उदार एवं आदर्श शासक था। ह्वेनसांग के शब्दों में, "वह अथक था और सत्यकार्यों में लिप्त होकर क्षुधा एवं निद्रा भी भूल जाता था।" प्रजा की समृद्धि तथा सुख के लिये वह निरंतर प्रयत्नशील रहता था। उसने परम्परागत शासन-प्रणाली में अनेकानेक नये प्रयोग किये। हर्षवर्द्धन के प्रशासन का उद्देश्य इसे लोकहित-कारी बनाना था। उसने अपने साम्राज्य का संगठन सामंती व्यवस्था पर आधृत बनाया था एवं राज्य की वास्तविक शक्ति को उसने अपने हाथों में केन्द्रित नहीं किया था, बल्कि अधीनस्थ शासकों में उसका उचित विभाजन किया था। सैनिक संगठन, कानून-व्यवस्था, राजस्व-व्यवस्था आदि में हर्ष ने पर्याप्त सुधार कर इन्हें और भी मजबूत बनाया था।

Scanned by CamScanner

(3) हर्ष एक कूटनीतिज्ञ के रूप में - हर्ष ने शस्त्र-प्रयोग के अतिरिक्त कूटनीतिक संबंधों की भी स्थापना की। उसने कामरूप के शासक से मैत्री सम्बन्ध स्थापित किया। पुलकेशिन II एवं ईरानी शासक को प्रभावित करने के लिए उसने चीन के साथ संबंध मजबूत किये। उसकी कूटनीतिज्ञता का एक ज्वलंत प्रमाण यह भी है कि उसने गौड़-नरेश शशांक की शक्ति को भाँप कर यथासंभव उससे प्रत्यक्ष संघर्ष नहीं किया। इस प्रकार हर्ष ने कूटनीति का सहारा लेकर अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया।

(4) हर्ष एक दानवीर के रूप में - हर्ष की दानवीरता जैसा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है। प्रयाग के पंचवर्षीय दान समारोह में वह अपने व्यक्तिगत वस्त्र भी दान कर देता था। इसके अलावा वह सभी धर्मावलम्बियों, दीनहीनों तथा सार्वजनिक कार्यों के लिये मुक्तहस्त दान देता था। यह गुण हर्ष के विशाल हृदय का संकेत है।

(5) हर्ष, धार्मिक दृष्टिकोण से ~~साहित्य एवं शिक्षा के संरक्षक के~~ रूप में - हर्ष एक धर्मसहिष्णु शासक था। शैव मतावलम्बी होते हुए भी उसने अन्य धर्मों को भी समान दृष्टिकोण से देखा। वह विभिन्न

Scanned by CamScanner

सम्प्रदायों के विद्वानों को बुलवाकर उनसे धर्म-चर्चा करता था। अपनी बहन राज्यश्री के कारण वह बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुआ तथा ह्वेनसांग के प्रभाव के कारण वह बौद्ध-धर्म का अनुयायी बन गया। हर्ष के प्रयासों से महायानी बौद्धधर्म का चीन में प्रचार हुआ। ह्वेनसांग के सम्मान में तथा बौद्धधर्म के प्रसार के लिए उसने कन्नौज में एक सभा बुलाई, जिसमें 20 राज्यों के राजा, विभिन्न धर्मों के विद्वान, ब्राह्मण तथा सहस्त्रों हीनयानी और महायानी बौद्ध इकट्ठे हुए। इस सभा ने महायान सम्प्रदाय की श्रेष्ठता स्थापित की। बौद्धधर्म का समर्थक होने के बावजूद ब्राह्मण धर्म में उसकी अभिरुचि कम नहीं हुई। प्रत्येक पाँचवें वर्ष वह प्रयाग में महामोक्ष-परिषद् का आयोजन कराता था, जिसमें बुद्ध, सूर्य और शिव की पूजा होती थी। इस प्रकार, अपनी प्रजा के भौतिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए हर्ष ने अथक प्रयास किए।

(6) हर्ष साहित्य एवं शिक्षा के संरक्षक के रूप में - हर्ष एक विद्यानुरागी शासक के रूप में विख्यात है। प्रो० आर० सी० मजूमदार के अनुसार वह युद्ध एवं शान्ति के कार्यों में समान रूप से कुशल था। जिस कुशलता से वह तलवार पकड़ सकता था, उतनी ही कुशलता से कलम भी। वह स्वयं

विद्वान था तथा विद्वानों को समुचित आदर देता, उन्हें दान देता तथा शैक्षणिक संस्थाओं को उदारतापूर्वक अनुदान देता था। R.S. Tripathi के अनुसार," One of the claims of Harsha to rememberance rests on his liberal patronage to learning----" बाणभट्ट के अनुसार हर्ष काव्य-रचना में भी दक्ष था। उसने प्रियदर्शिका, नागानन्द एवं रत्नावली नामक तीन नाटक लिखे। हर्ष के दरबार में ख्यातिप्राप्त विद्वान विद्यमान थे। इनमें सर्वाधिक विख्यात बाणभट्ट थे, जिन्होंने कादम्बरी, हर्षचरित, पूर्वपीठिका और चण्डीशतक की रचना की। बाण के अतिरिक्त मयूर और मातंग दिवाकर भी हर्ष के दरबारी थे। उड़ीसा का प्रसिद्ध विद्वान जयसेन भी हर्ष के समय में था, जिसे हर्ष ने अस्सी गाँवों की आमदनी दानस्वरूप देनी चाही, परन्तु उसने नहीं ली। नालन्दा-महाविहार को भी उसने अनेक ग्राम दान किए।

इस प्रकार, अनेक प्रबुद्ध इतिहासकारों ने हर्ष की तुलना अशोक, समुद्रगुप्त, अकबर आदि महान सम्राटों से करते हुए, उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। के० एम० पणिक्कर ने हर्ष का मूल्यांकन करते हुए ठीक ही लिखा है," यह हर्ष का गौरव था कि वह चंद्रगुप्त मौर्य से

Scanned by CamScanner

प्रारंभ होने वाली उन हिन्दू शासकों की लंबी पंक्ति का अंतिम शासक था, जिनके समय में विश्व ने भारत को एक प्राचीन सभ्यता के रूप में ही नहीं वरन् मानवता की उन्नति के लिए क्रियाशील शक्ति के रूप में देखा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि शासक, कवि, धार्मिक, उत्साही के रूप में हर्ष को भारतीय इतिहास में उच्च स्थान प्राप्त होना चाहिए।"

Scanned by CamScanner